अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

॥ शिक्षा-भूषण ॥

अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान, विक्रम संवत् 2079

शिक्षा-भूषण त्रयी : एक परिचय

भारत का वर्तमान समय सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक-राजनीतिक तथा शैक्षिक दृष्टि से विचारधारात्मक परिवर्तन का समय है। संप्रति 'स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव' की पृष्ठभूमि में समूचा देश 'इंडिया' से पुनः 'भारत' बनने की ओर उत्तरोत्तर अग्रसर है। राष्ट्रोत्थान के अनुकूल इन सकारात्मक परिवर्तनों में शिक्षक की सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षक ही वह व्यक्ति है जो नागरिकों में ज्ञान-विज्ञान का सतत् प्रणयन और प्रकीर्णन करता है। इसलिए भारतीय समाज में शिक्षक का सर्वोच्च स्थान एवं सम्मान रहा है। हमारे देश में विविध विषयों के अगणित योग्य शिक्षक हैं जिनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र-आराधन तथा समाज-निर्माण में लगा है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ऐसे गण्यमान्य शिक्षकों को सन 2015 से समारोह पूर्वक सम्मानित कर रहा है।

महासंघ भारत को निरंतर प्रगति के पथ पर ले जाने के उद्देश्य से शिक्षा-जगत एवं समाज-जीवन के अनेक प्रकल्पों एवं योजनाओं के माध्यम से अपने राष्ट्र-भाव को प्रदर्शित करता रहा है। स्वच्छता अभियान, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्मोत्सव पर रक्तदान शिविर, कर्तव्य-बोध दिवस, गुरु वंदन कार्यक्रम, भारतीय नव संवत्सर समारोह, शाश्वत जीवन मूल्यों पर जन जागरण अभियान, सामाजिक समरसता पर केंद्रित कार्यक्रम तथा संप्रति स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से महासंघ तथा उससे संबंधित अनेक शिक्षक संगठन अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को प्रकट करते रहे हैं।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी महासंघ देश के तीन अग्रणी, सुविख्यात, कर्मयोगी तथा राष्ट्रीयता-बोध से ओतप्रोत प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को समारोह पूर्वक सम्मानित कर रहा है जिनका शिक्षा जगत में असाधारण योगदान रहा है। विक्रम संवत् 2079 के लिए महासंघ ने शिक्षा-भूषण सम्मान हेतु जिन ख्यातनाम शिक्षाविदों का मनोनयन किया है, उनका संक्षिप्त परिचय इस पुस्तिका मं दिया जा रहा है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

॥ शिक्षा-भूषण ॥

अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान, विक्रम संवत् 2079

अभिनंदन-पत्र

परम सम्माननीय डॉ. चांदकिरण सलूजा जी,

आपश्री संस्कृत, हिंदी, भाषा विज्ञान, शिक्षा राजनीति विज्ञान, आदि विविध विषयों में परास्नातक उपाधि के साथ निष्णात योग्यता तथा सुदीर्घ अध्यापन अनुभव धारण करने वाले, शिक्षा जगत् को समर्पित व्यक्तित्व हैं जिन्होंने अपने लेखन-संपादन, शिक्षा-मार्गदर्शन तथा विशताधिक पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के साथ शिक्षा दर्शन, शिक्षा समाजशास्त्र, शिक्षा मनोविज्ञान जैसे विषयों पर अनेक वर्षों तक प्रभावी शिक्षण कार्य किया है। आयुर्वेद, योग, भगवद्गीता, वेदांत, ज्योतिष, नाट्यशास्त्र, महाभारत, रामायण, रघुवंश जैसे महान् भारतीय पौराणिक आख्यान-प्रधान विषयों पर विशद् पुस्तक-शृंखला की रचना कर के शिक्षा-जगत् को समृद्ध करने वाले **डॉ. चांदकिरण सलूजा जी** को **'शिक्षा भूषण'** अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान से विभूषित करते हुए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

श्री चांदकिरण जी ने विज्ञान विषय के अध्ययनोपरांत पाँच विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है तथा बी.एड., एम.एड., एल.एल.बी, एम.फिल. के उपरांत पीएच.डी. (विद्यावाचस्पति) की सर्वोच्च उपाधि अपने सतत अध्ययन तथा श्रमशीलता के परिणाम स्वरूप प्राप्त की है। तदुपरांत आपको निरंतर शोध तथा प्रकाशन की श्रेष्ठ उपलब्धियों के आधार पर डी.लिट. की मानद उपाधि भी प्रदान की गई है।

शिक्षण-कार्य के साथ शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में आपकी विशेष प्रतिष्ठा है। अध्यापन, शोध, शोध-निर्देशन तथा शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए कार्य शिक्षा-जगत् में अविस्मरणीय हैं। आपने अपनी कार्यशीलता में सदैव भारतीय शिक्षा-आधारों, भारतीय शिक्षा-दृष्टिकोण तथा भारतीय मूल्यों को अपनाये रखा है।

आप शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के अतिरिक्त विभिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शैक्षिक परिषद, पाठ्यचर्या समितियों एवं परीक्षा समितियों के सदस्य के रूप में निरंतर कार्य करते रहे हैं। संस्कृत प्रसार में संलग्न संस्था संस्कृत भारती के आप लगभग 13 वर्षों तक राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान में शैक्षिक निर्देशक के दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

आपको शिक्षा संस्कृति उत्थान द्वारा 'पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षा सम्मान' के साथ संस्कृत कार्यार्थ राष्ट्रपति महोदय द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। इसी के साथ वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश द्वारा उच्चतम विश्व भारती पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

आपने अनेक पुस्तकों का लेखन, संपादन एवं अनुवाद भी किया है। संस्कृत अनुवाद सुधा, शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत, शिक्षा: एक विवेचन, शिक्षा: दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, शिक्षा: सामाजिक परिप्रेक्ष्य, शिक्षा समाज और विकास आदि पुस्तकों के लेखन के साथ हरियाणा बोर्ड एवं पतंजलि प्रतिष्ठान (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में भी आपकी केंद्रीय भूमिका रही है। आपने ओएनजीसी द्वारा संयोजित पुस्तक-परियोजना के अंतर्गत आयुर्वेद, योग, श्रीमद्भगवद्गीता, वेदांत, ज्योतिष, कला, सुभाषितानि, महाभारतम, रामायणम, रघुवंशम, वास्तु शास्त्र, भारतीय गणित, कला, विधि, प्रशासन तथा न्याय दर्शन संबंधी 48 पुस्तकों की शृंखला के प्रधान संपादक के रूप में कार्य किया है।

भारतीय दर्शन, भारतीय शिक्षा पद्धति एवं भारतीय ज्ञान-विज्ञान के मौलिक चिंतन के साथ भारतीय भाषाओं के उत्थान के कार्य के प्रति निरंतर समर्पण भाव आपको शिक्षा-जगत् में विशिष्ट बनाता है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ आपकी इस शिक्षा-साधना और भारत-साधना का अभिनंदन करता है तथा ईश्वर से आपके दीर्घायु एवं स्वस्थ आयुष्य की मंगल कामना करता है।

मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी, विक्रम संवत् 2079 (12 नवम्बर, 2022)

शिवानन्द सिन्दनकेरा
महामंत्री
(अ.भा.रा.शै.महासंघ)

जगदीश प्रसाद सिंघल
अध्यक्ष
(अ.भा.रा.शै.महासंघ)

डॉ. चांद किरण सलूजा

शिक्षा

- मूलत: छात्र, स्नातकोत्तर संस्कृत, हिंदी, राजनीति विज्ञान, भाषा विज्ञान एवं शिक्षा B.Ed., M.Ed., एल.एल.बी., एम.फिल., पीएच.डी. (विद्यावाचस्पति), डी.लिट. (मानद उपाधि)

अध्यवसाय एवं पदानुभव

कुल शिक्षण अनुभव लगभग 40 वर्ष। विद्यालय स्तर पर नौ वर्ष एवं विश्वविद्यालय स्तर पर 31 वर्ष। शिक्षा विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय में आचार्य पद पर B.Ed., M.Ed. एम.फिल. आदि विषयों में शिक्षण कार्य। शिक्षा दर्शन, शिक्षा समाजशास्त्र, शिक्षा मनोविज्ञान, भाषा-शिक्षण, समाज-विज्ञान शिक्षा, शोध विधि आदि विषयों का अध्यापन, M.Ed. स्तर पर लगभग 120 छात्रों, एम.फिल. स्तर पर लगभग 50 छात्रों तथा पीएच.डी. स्तर पर लगभग 20 छात्रों का शोध निर्देशन किया। संस्कृत प्रसार में संलग्न संस्था संस्कृत भारती के लगभग 13 वर्षों तक राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली तथा विभिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शैक्षिक परिषद् एवं पाठ्यचर्या समितियों और परीक्षा समितियों के सदस्य के रूप में लंबा कार्यानुभव।

प्रकाशन एवं शोध

संस्कृत अनुवाद सुधा, शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत, शिक्षा : एक विवेचन, शिक्षा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, शिक्षा : सामाजिक परिप्रेक्ष्य, शिक्षा, समाज और विकास, इक्कीसवीं सदी में संस्कृत शिक्षा, प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था (प्रकाश्य), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Aorist in Samskrit Grammar।

संपादित पुस्तकें

हरियाणा बोर्ड द्वारा प्रकाशित मूल्य शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों का संपादन, कणिका, मणिका, ऋतिका, डी.ए.वी. संस्था की सुरभि (प्रवेशिका से कक्षा 8 तक)। संस्कृत भारती की गीता प्रवेश तथा सरला, सुगमा, सरसा, सुखदा आदि पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के पतंजलि संस्कृत प्रतिष्ठान की संस्कृत पाठ्यपुस्तकें (कक्षा-1 से 8) विभिन्न पुस्तक शृंखलाओं का संपादन : आयुर्वेद-6पुस्तकें, योग-4 पुस्तकें, श्रीमद्भगवद्गीता-7 पुस्तकें, वेदांत-5 पुस्तकें, ज्योतिष-3 पुस्तकें, कला, नाट्य शास्त्र एवं संगीत-4 पुस्तकें, सुभाषितानि, महाभारतम्, रामायणम्, रघुवंशम्, न्याय दर्शन आदि से संबंधित तीन पुस्तकें। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम् की दीक्षा योजना के परामर्शदाता एवं संपादन मंडल के सदस्य, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान के न्यास सदस्य।

सम्मान एवं पुरस्कार

2019 में राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत कार्य हेतु सम्मानित। 2020 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विश्व भारती पुरस्कार से सम्मानित। शिक्षा, संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा मदन मोहन मालवीय पुरस्कार से सम्मानित।